वशीयत नामा

यह वशीयत नामा आज तारीख 10-8-72 को मोलवाड़ा में निमनलिखित लिखा गया जो इस प्रकार हैं :-

मै सुगनचन्द सरीन वल्द नत्थूलाल सरीन उम्र 65 साल ब होसोहवास वशीयत कर्ता हूं कि मैं दिल का मरीज हूं, और मेरी पत्नि भी ज्यादा उमर होने को वजह से अकसर बिमार रहती हैं, हम दोनो को सिर्फ एक ही औलाद हैं जिसका नाम कमलकुमारी हैं जिसकी शादी श्री कृष्णकुमार वल्द प्रकाशचन्द्र चढा मोलवाड़ा से करदी गई हैं, ।

मुझे व मेरी पत्नि को अब ज्यादा अर्सा तक जिन्दा रहने को उम्मीद कम हैं इसलियें मैं बिगैर किसी दबाव के मेरी ख्वाहिश से मेरी खुद की जाति कमाई से बनाई हुई मनकुला बगैर मनकुला जायदाद जिसकी तफसीर निचे दी हैं और जिसका मै हर तरह सें मालिक हूं, और मुझे इस जायदाद को बेचने व वसीयत करने का पूरा हक है । इस मेरी जायदाद का मै अपनी वाहिद औलाद वा वाहिद वारिश कमलकुमारी को पूर्ण हक्क के साथ वारिस करार देता हूं ।

तफसील जायदाद

जायदाद	मुस्तरका	या खुद की	कीमत रूपये मे
1- प्लाट एक अदद आरकेपुरम इन्दौर में	-	खुद का नीजि	25155-00
2- एक ट्रेक्टर कम्प्रेसर नं0आरे जे ई 1262 ड्रील मशीन वगैरा के साथ	-	खुद का निजी	15000-00
3- नकदी रूपया	-	निजी	जो वक्त मोत मेरे पास हो । (आज ता0 को करीब 4000/- रूपये)

उपरोक्त लेख की नकल पेश की
वह रजू की गई
नगर शिल्पज्ञ
पा. नि. इन्दौर

उपरोक्त लिखी जायदाद के अलावा जो भी और जायदाद मेरी जिन्दगी में मैं हासिल करूंगा या बनाऊंगा, मेरी जिन्दगी में उसका मालिक रहूंगा । मेरी मोत के बाद उस नई जायदाद को भी वारिश मेरी एकलोती औलाद कमलकुवारी होगी ।

उपरोक्त लेख की नकल पेश की
वह रजू की गई

Shugan Chand

मेरी जायदाद की कलम नं0 1 , 2 , 3 की वारिश कमल कुमारी को रहन रखनें बेचेने व उसकी मर्जी के मुताबिक उतने ही हक होगें जो मुझे मेरी जिन्दगी में हक्क हैं । मुझे आज तारीख 10-8-72 तक इस जायदाद के मालिकाना हक हासिल हैं हम दोनों मै ओर मेरी पत्नि की बिमारी को देखते हुऐ मैं आज वशीयत करता हूँ, कि उपरोक्त जायदाद की मालिक मेरी अकेली बेटी (कमलकुमारी) ही मेरी जायदाद वाहिज मालिक होगी । ताकि मेरे मरने के बाद आने वाले दिनो में मेरी वाहिद वारिश कमलकुमारी को किसी तरह के झगड व फसाद का सामना न करना पडें ।

मेरे मरने के बाद मेरी पत्नि शकुन्तला देवी अगर अपनी लड़की के पास न रहना चाहें तो मेरी वारिश अपनी मां को उसके रहने के खर्चे के लिये उसकी जिन्दगी तक 150/- रु माहवार बकायादा देती रहेगी ।

मैनें आज तक जंहा तक मुझे याद है कोई वशीयत नही लिखी हैं इससें पहिलें की कोई भी तहरीर या वसीयत मैं आज तारीख से रद्द करता हूँ, और आज लिखी वशीयत को निचे दसतखत सुदा गवाहान के सामनें कानूनी तोर पर आखिर वशीयत करता हूं । ताकि मेरी वाहिद ओलाद वा वारिश को कोई परेशानी न उठानी पडें ।

यह वशीयत मैने आज तारीख 10-8-72 को भीलवाड़ा (फ्रेन्डस् कामसियल हाउस) में मेरी राजी खुशी वा अकल होसियारी बाहोश हवास बिना किसी दबाव वा बिगेर नशा कें पंाच मेतबीरान के सामने लिख दी हैं ताकि सनद रहे वक्त जरूरत काम आवें ।

गवाहान-व मेतबिरान

1- शकुन्तला देवी
2. Basholamlal
3. Vasudev
4. Arjandev Kapoor

ता0 10-8-72

Shugan Chand